भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के दीक्षांत समारोह में भारत के राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविन्द का सम्बोधन

मैं भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली के 56वें दीक्षांत समारोह में उन सभी छात्र एवं छात्राओं को, जिन्हें आज इस समारोह में उपाधि प्राप्त हो रही है, हार्दिक बधाई देता हूँ। इस अवसर पर मैं आपके सभी शिक्षकों, अभिभावकों एवं परिवारजनों को भी हार्दिक बधाई देता हूँ जिनके मार्गदर्शन एवं त्याग से आप इस मुकाम पर पहुँचे हैं। इस देश को कृषि के क्षेत्र में शिखर पर पहुँचाने के लिए आप जैसे प्रशिक्षित छात्र-छात्राओं को आगे आना होगा एवं इस संस्थान में अर्जित अपने ज्ञान और कौशल को कृषि एवं किसान कल्याण को समर्पित करना होगा।

मुझे यह जानकर अपार हर्ष हो रहा है कि पूसा संस्थान देश को खाद्यान्न उत्पादन के लिए जिम्मेदार हरित क्रांति का केंद्र बिन्दु रहा है एवं यहाँ से विकसित तकनीकियों द्वारा हमारे देश की कृषि व्यवस्था में सार्थक एवं गुणात्मक परिवर्तन लाने में सफलता प्राप्त हो रही है। जहाँ पहले हमें खाद्यान्न लिए दूसरे देशों के ऊपर निर्भर रहना पड़ता था वहीं आज हम जरूरतमंद देशों की मदद करने के साथ साथ कृषि निर्यात द्वारा विदेशी मुद्रा भी अर्जित कर रहे हैं। मुझे यह जानकार प्रसन्नता हो रही है कि पूसा संस्थान हमारे पड़ोसी देश म्यांमार एवं अफगानिस्तान में उच्च कृषि शिक्षा एवं अनुसन्धान संस्थान के नवनिर्माण में मदद कर रहा है।

देश में लगभग 276 मिलियन टन अनाज, 300 मिलियन टन बागवानी फसलें, 164 मिलियन लीटर दूध, और 11 मिलियन टन मछली का उत्पादन हो रहा है। यह उपलब्धि वैज्ञानिक अनुसन्धान के लिए आधारभूत संरचना एवं मानव संसाधन पर किये गए बजटीय प्रावधान के कारण संभव हो सका है। परंतु हमारे देश की आबादी के भरण पोषण एवं अनेकानेक प्राकर्तिक चुनौतियों

को देखते हुए, कृषि अनुसंधान एवं विकास में और अधिक निवेश की आवश्यकता है।

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आइएआरआई) ने विभिन्न फसलों की नई प्रजातियों एवं संकर किस्मों के विकास में अपना अतुलनीय योगदान दिया है| इस दिशा में अनेक ऐसी प्रजातियाँ विकसित की गई हैं जिनमें पोषक तत्वों की प्रचुरता के साथ-साथ रोगों एवं कीटों के विरुद्ध लड़ने की क्षमता भी है।

- मुझे यह जानकर खुशी हो रही है की पूसा संस्थान के द्वारा विकसित बासमती किस्मों का विदेशी मुद्रा अर्जन में करीब 18000 करोड़ रूपये का वार्षिक योगदान है, जिसका सीधा लाभ बासमती किसानों को मिलता है, इसके लिए संस्थान बधाई का पात्र है।
- इसी संस्थान द्वारा विकसित गेहूं की अनेक प्रजातियों ने देश में रिकोर्ड गेहूं का उत्पादन दिया है और इस दिशा में अकेले एक किस्म एच डी 2967 की खेती आज 120 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में की जा रही है जिससे लगभग 500 लाख टन गेहूँ का उत्पादन लिया जा रहा है।
- सरसों के क्षेत्र में भी इस संस्थान का बड़ा योगदान है एवं इस संस्थान के द्वारा विकसित कनोला गुणवत्ता वाली सरसों की प्रजाति पूसा डबल जीरो सरसों 31, देश की पहली उच्च गुणवत्ता वाली किस्म है जो कि मानव एवं पशु स्वास्थ्य के लिए अनुकूल है|
- जहाँ तक बागवानी फसलों का सवाल है इस संस्थान की अनेकों उपलब्धियां है| संस्थान के द्वारा विकसित आम की संकर प्रजाति आम्रपाली एवं मल्लिका ने उड़ीसा एवं झारखण्ड के आदिवासी क्षेत्रों के किसानों की आय को बढ़ाने में अहम् योगदान दिया है। ये प्रजातियाँ पंद्रह से अधिक राज्यों में लगाई जा रही हैं एवं इनसे देश को काफी विदेशी मुद्रा अर्जित होती है। इन किस्मों की बाग़वानी सूखे एवं बंजर जमीनों में भी की जा सकती है, जहाँ दूसरी फसलों की खेती बहुत ही कठिन है|

हमारे पड़ोसी देश नेपाल एवं बंगलादेश में भी ये किस्में काफी लोकप्रिय हैं।

- इसी क्रम में पूसा द्वारा विकसित सब्जी की किस्मों ने देश में पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने में अहम् भूमिका निभाई है।
- अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए मृदा स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर कार्य करना अत्यंत आवश्यक है। संतुलित खादों का उपयोग कर किसान भाई अपना कृषि व्यय कम कर सकते हैं और इससे भूमि की उर्वरा शक्ति को बनाये रखने में भी मदद मिलती है। किसानों के घर पर ही मृदा परीक्षण के लिए मौजूदा परीक्षण सेवाओं के पूरक के रूप में पूसा एस.टी.एफ.आर. नामक उपकरण इस संस्थान द्वारा विकसित किया जाना सराहनीय है जिससे मृदा स्वास्थ्य परीक्षण में अहम् योगदान मिलेगा। आज राष्ट्रीय स्तर पर सरकार ने एक मिशन के तौर पर नीम लेपित यूरिया का उत्पादन शुरु किया है जिसके प्रयोग से उत्पादन में लगभग 5-7 प्रतिशत की वृद्धि होती है एवं किसानों के व्यय में लगभग 10 प्रतिशत की कमी आ रही है जो की अपने आप में एक अतुलनीय उपलब्धि है और मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई है की नीम लेपित यूरिया तकनीकी का विकास इसी संस्थान के द्वारा किया गया था।
- मुझे विश्वास है कि इसके अलावा इस संस्थान द्वारा जैव पोषित मक्का, समेकित कृषि प्रणाली, सतत आय के लिए फसल विविधिकरण, संरक्षित खेती, शुष्क क्षेत्रों में खेती के लिए पूसा हाइड्रो जेल, जैविक कारकों के द्वारा रोग एवं सूत्र कृमि नियंत्रण, खाद टर्नर और फीड ब्लाक मशीन, कृषि प्रसार में डाक घर संपर्क कृषि प्रसार मॉडल जैसी आधुनिक एवं उपयोगी तकनीकियों के विकास से कृषि एवं किसानों की स्थिति में काफी सुधार आएगा।

- कृषि को बढ़ावा देने एवं खाद्य उत्पादन के साथ-साथ ग्रामीण आजीविका को सुदृढ़ करने के लिए सरकार द्वारा बहुत सी कृषि एवं किसान कल्याण योजनाओं की शुरूआत की गई है। इनमें से कुछ प्रमुख योजनाएं जैसे - प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, कृषि मशीनीकरण मिशन, राष्ट्रीय कृषि बाजार, ग्रामीण भंडार योजना, एवं मृदा स्वास्थ्य कार्ड आदि प्रमुख है। मुझे विश्वास है की किसान भाईओं को इन योजनाओं का पूरा लाभ प्राप्त हो रहा है।
- कृषि एवं किसान कल्याण की महत्ता को दर्शाने हेतु इस वर्ष गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में राजपथ पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् की झांकी को प्रदर्शित किया गया, जो वैज्ञानिकों, विद्यार्थियों एवं किसानों को और अधिक रूचि से कार्य करने के लिए प्रोत्साहन प्रदान करेगा।

सभी छात्र एवं छात्राएं जिन्हें आज इस दीक्षांत समारोह में उपाधि प्राप्त हो रही है, उनमे कृषि एवं किसान कल्याण की जिम्मेदारी उठाने का जज्बा होना चाहिए। अब यहाँ से आप अपनी दिशा तय करने के साथ-साथ देश के कृषि विकास में महत्वपूर्ण योगदान दें, राष्ट्र ऐसी आपसे अपेक्षा रखता है।

अंत में, मैं पुन: सभी विद्यार्थियों, अभिभावकों, शिक्षकों एवं इस दीक्षांत समारोह से जुड़े सभी लोगों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

जय हिन्द - जय भारत